Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 1

– Save This Page as a PDF–

यहोवा की आत्मा मुझ पर है

लूका ४:१६-३०

खोदाई: उस शबात पर यीशु ने जो किया उसमें इतना अलग क्या था? मसीहा के लिए शुभ समाचार का क्या अर्थ था? उन्होंने किस तरह से कैदियों के लिए आज़ादी की घोषणा की और अंधों के लिए दृष्टि का नवीनीकरण किया? प्रभु की कृपा का वर्ष कौन सा था? यशायाह ६१:२ के बीच में प्रभु के रुकने का क्या महत्व था? लोगों ने कैसे प्रतिक्रिया दी? क्यों? येशुआ ने एलिय्याह और एलीशा का उदाहरण क्यों दिया? वह क्या कहना चाह रहा था? इससे उनका आश्चर्य क्रोध में क्यों बदल गया? वो क्या करते थे?

चिंतन: असीसी के संत फ्रांसिस ने एक बार कहा था, “हर समय सुसमाचार का प्रचार करो।” . . और यदि आवश्यक हो तो शब्दों का प्रयोग करें।” आप शुभ समाचार “कैसे” कर रहे हैं? क्या यहोवा की आत्मा तुम पर है? क्या प्रभु आपके होठों पर है? क्या आपका परिवार, आपके रिश्तेदार, आपके पड़ोसी, या आपके सहकर्मी आपको अच्छा समाचार कहेंगे, या “बुरा समाचार?” क्यों या क्यों नहीं? इस सप्ताह आप किन “अन्यजातियों” की सेवा कर रहे हैं?

जैसे ही शुक्रवार के सूरज की लंबी छाया शांत घाटी के चारों ओर बंद हो गई, यीशु ने आराधनालय-नेता के घर की छत से तुरही की परिचित दोहरी ध्वनि सुनी, जो पवित्र दिन के आगमन की घोषणा करती थी। वह सब्त का दिन था। शांत गर्मी की हवा में एक बार फिर यह सुनाई दिया, यह बताने के लिए कि सारा काम एक तरफ रख देना चाहिए।

जैसे ही शब्बत की सुबह हुई, यीशु उस आराधनालय में लौट आए, जहां एक बच्चे, एक युवा और एक आदमी के रूप में, वह अक्सर बड़ों और सम्मानित लोगों के बीच सामने नहीं, बल्कि बहुत पीछे बैठकर पूरी विनम्रता से पूजा करते थे। पुराने जाने-माने चेहरों ने उन्हें घेर लिया। यीशु ने सेवा के परिचित शब्द सुने, लेकिन वे हमेशा उसके लिए उनसे कितने भिन्न थे, जिनके साथ वह सामान्य पूजा में घुलमिल गया था। उसे नाज़रेथ छोड़े हुए कुछ ही महीने हुए थे, लेकिन अब वह फिर से घर पर था, वास्तव में उनके बीच एक अजनबी था। जहाँ तक हम जानते हैं, यह पहली बार था कि अभिषिक्त व्यक्ति ने एक आराधनालय में पढ़ाया था, और संयोगवश यह उसके गृहनगर नाज़रेथ में था।

छोटे आराधनालय के लोगों ने शमा (व्यवस्थाविवरण ६:४) का जप करते हुए और भजन के शब्दों को गाते हुए अपनी आवाजें उठाईं। कमरा छोटा और चौकोर था, प्रत्येक दीवार

Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 2

पर लकड़ी की बेंचें लगी हुई थीं। यरूशलेम में मंदिर, अपने पुजारियों और पशु बलि के साथ, यहूदी जीवन का केंद्र था। हालाँकि, स्थानीय आराधनालय यहूदी धर्म की जीवनधारा था और अब भी है। पहली शताब्दी में आराधनालय एक अंतरंग स्थान था जो तानाख के धर्मी लोगों को मंदिर की तुलना में कम औपचारिक सेटिंग में इकट्ठा होने की इजाजत देता था। वहाँ कोई महायाजक, कोई लेवी, और न ही कोई मानक धार्मिक अनुष्ठान था। किसी को भी उठकर पवित्र पुस्तक पढ़ने की अनुमति थी।



यीशु नाज़रेथ गया, जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ था,
और सब्त के दिन वह आराधनालय में गया, जैसा कि किसी भी अच्छे यहूदी के लिए उसकी प्रथा थी। और वह सार्वजनिक रूप से पुस्तक से पढ़ने के लिए खड़ा हुआ (लूका ४:१६)। पाठक खड़ा रहा; रब्बी बैठ गया. आज तक किसी आराधनालय में तुम टोरा पढ़ने के लिए खड़े होते हो। इसे अलियाह (आराधनालय में बीमा या मंच तक बुलाना) कहा जाता है। इस बीम पर मंच, या व्याख्यान, मिग्दल ईज़, नहेमायाह ८:४ का लकड़ी का टॉवर खड़ा था, जहां टोरा और भविष्यवक्ताओं को पढ़ा जाता था।

भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक येशु को सौंपी गई। उसे खोलकर, उसने वह स्थान पाया (यशायाह ६१:१-२ए) जहां लिखा है: प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि:

(1) उसने गरीबों को आत्मा से शुभ समाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। हालाँकि कहा जाता है कि रुआच हाकोडेश द्वारा केवल यीशु का अभिषेक किया गया था (लूका ३:२२; अधिनियम ४:२६-२७, १०:३८), वह आज आत्मा से भरे प्रचारकों और शिक्षकों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं।

(2) उसने मुझे कैदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करने के लिए भेजा है। इसे प्रतीकात्मक रूप से समझा जाता है, और यह पापों की क्षमा को संदर्भित करता है (लूका १:७७, ३:३, २४:४७; अधिनियम २:३८, ५:३१, १०:४३, १३:३८ और २६:१८)।

(3) और अंधों की दृष्टि नवीकृत हुई। यह उस अंधे का संदर्भ हो सकता है जिसे प्रभु ने अपने मंत्रालय के दौरान ठीक किया था: Ek देखें – दूसरा मसीहाई चमत्कार: यीशु ने एक मूक बधिर को ठीक किया; Fi यीशु अंधों और गूंगों को चंगा करता है; Fw – फरीसियों और सदूकियों का खमीर; Gt – तीसरा मसीहाई चमत्कार: यीशु ने एक जन्मांध

Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 3

व्यक्ति को ठीक किया; In देखें – बार्टिमायस को उसकी दृष्टि प्राप्त होती है। हालाँकि, दूसरे अर्थ में, यह रूपक रूप से उन लोगों को भी संदर्भित कर सकता है जो आध्यात्मिक रूप से अंधे हैं (लूका १:७८-७९, २:३०-३२, ३:६, ६:३९; अधिनियम ९:८-१८, १३:४७, २२:११-१३ और २६:१७-१८)।

(4) कुचले हुए लोगों को छुड़ाना। यहां जिस शब्द का अनुवाद मुक्ति किया गया है, उसका अनुवाद इस श्लोक में पहले स्वतंत्रता के रूप में किया गया है। इसलिए, यह पिछले कथनों के समानांतर है (विशेष रूप से प्रेरितों के काम २६:१८, जहां पापों की क्षमा कुचले गए लोगों के लिए रिहाई के समानांतर है)।

(5) प्रभु की कृपा के एक वर्ष की घोषणा करना (लूका ४:१७-१९)। यह मूलतः परमेश्वर के राज्य के शुभ समाचार का पर्याय है (लूका ४:४३)। येशुआ दावा कर रहा था कि परमेश्वर का राज्य आ गया है। तानाख के पैगम्बरों की पूर्ति में, अब सभी को मोक्ष की पेशकश की जा रही थी।

प्रत्येक टोरा भाग के साथ पैगंबरों का एक संगत भाग भी पढ़ा जाता है। हो सकता है कि उसने टोरा भाग और भविष्यवाणी भाग दोनों को पढ़ा हो, लेकिन यहां केवल भविष्यवाणी वाले भाग का ही उल्लेख किया गया है। यीशु जो करते हैं वह यह है कि वह पद 1 का पूरा भाग पढ़ते हैं, लेकिन पद 2 का केवल पहला भाग ही पढ़ते हैं (यशायाह ६१:१-२a)।

मसीह के वहीं रुकने का कारण यह था कि पद का पहला भाग उनके पहले आगमन से पूरा होना था: उन्होंने मुझे कैदियों के लिए स्वतंत्रता और अंधों के लिए दृष्टि की बहाली की घोषणा करने, उत्पीड़ितों को रिहा करने, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए भेजा है (यशायाह ६१:२ए)। और कविता का दूसरा भाग उनके दूसरे आगमन से पूरा होगा: और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध का दिन (यशायाह Ka पर मेरी टिप्पणी देखें – और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध का दिन), शोक मनाने वाले सभी लोगों को सांत्वना देने के लिए (यशायाह ६१:२b)।

तब उस ने पुस्तक लपेटकर सेवक को लौटा दी, और बैठ गया (लूका ४:२०अ)। पाठक खड़ा रहा; रब्बी बैठ गया. यहाँ यीशु ने एक रब्बी का पद ग्रहण किया और उपदेश देते हुए बैठे। वे तोरा पढ़ने के लिए खड़े हुए, और वे तोरा सिखाने के लिए बैठ गए। अब तक सब कुछ उस समय यहूदी प्रथा के अनुसार था, सिवाय इसके कि यीशु ने पढ़ने के लिए आवश्यक छंदों की स्वीकृत संख्या को पूरा नहीं किया था। कम से कम तीन श्लोकों की आवश्यकता थी और उन्होंने केवल डेढ़ पढ़ा।

आराधनालय में सभी की निगाहें उस पर टिकी थीं (लूका ४:२०b), क्योंकि सबसे पहले, उसे जो पढ़ना चाहिए था उसका केवल आधा ही पढ़ा, और दूसरी बात, वह क्या कहने जा रहा था? रब्बियों ने सिखाया कि ये दो छंद एक मसीहाई भविष्यवाणी थे। सो जब वह उन से

Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 4

कहने लगा, कि आज यह वचन तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ (लूका ४:२१), तो वे समझ गए, कि वह मसीह होने का दावा कर रहा है।

सभी ने उसकी प्रशंसा की और उसके होठों से निकले दयालु शब्दों से आश्चर्यचकित हुए। परन्तु वे चुपचाप एक दूसरे से फुसफुसाए: क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है? उन्होंने आलंकारिक रूप से पूछा (लूका ४:२२)। यह कहने जैसा है, “यह बड़ा शॉट कौन सोचता है कि वह है?” उनके लिए, वह यूसुफ का पुत्र था और इससे अधिक कुछ नहीं। वे नाराज थे. दोमुंहे होने के कारण, उन्होंने तुरंत उसे और उसके संदेश दोनों को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने पूरे गलील में उसके चमत्कारों के बारे में सुना था, लेकिन उन्होंने कभी कोई चमत्कार होते नहीं देखा था।

यीशु ने उन से कहा, निश्चय तुम मुझे यह कहावत सुनाओगे, हे वैद्य अपने आप को चंगा करो! यहां अपने गृहनगर में चमत्कार करें (देखें Br– यीशु का कफरनहूम में पहला प्रवास, और Cg – यीशु ने एक अधिकारी पुत्र को ठीक किया) जो हमने सुना है कि आपने कफरनहूम में किया था (लूका ४:२३)। लेकिन उन्होंने उनकी निष्क्रिय जिज्ञासा को संतुष्ट नहीं किया और पीछे नहीं हटे।

मैं तुम से सच कहता हूं (आमीन), कोई भी भविष्यवक्ता अपने गृहनगर में स्वीकार नहीं किया जाता (लूका ४:२४)। उनके अविश्वास के जवाब में, मसीह ने उन्हें याद दिलाया कि इज़राइल ने अक्सर हाशेम के भविष्यवक्ताओं को अविश्वास में जवाब दिया था। एलिय्याह लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाने के लिए आसन्न न्याय के ईश्वर के संदेश के साथ एक धर्मत्यागी राष्ट्र में प्रकट हुआ था। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि एलिय्याह के समय में इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं, जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द था और पूरे देश में भयंकर अकाल पड़ा था। तौभी एलिय्याह को उन में से किसी के पास नहीं, परन्तु सीदोन के सारपत में एक विधवा के पास भेजा गया (लूका ४:२४-२६)। इस घटना का वर्णन प्रथम राजा १७:१, ७, ९-२४ और १८:१ में किया गया है। इस्राएल के लोगों को भविष्यवक्ता का संदेश नहीं मिला और इसलिए उनके मंत्रालय से कोई लाभ नहीं मिला, लेकिन एक अन्यजाति विधवा ने भविष्यवक्ता के वचन पर विश्वास किया और लाभ प्राप्त किया।

इसी प्रकार, और एलीशा भविष्यवक्ता (द्वितीय राजा ५:१-१४) के समय में इस्राएल में बहुत से लोग कुष्ठ रोग से पीड़ित थे, फिर भी उनमें से एक को भी शुद्ध नहीं किया गया था – केवल सीरियाई नामान (लूका ४:२७)। उस समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे। परन्तु इस्राएलियों ने भविष्यद्वक्ता की बात पर विश्वास न किया, और सहायता के लिये उस की ओर न फिरे। एलीशा के मंत्रालय से सहायता प्राप्त करने वाला एकमात्र व्यक्ति, फिर से, एक गैर-यहूदी था। यहां यीशु पहले से ही संकेत देना शुरू कर रहे हैं कि यहूदी क्या अस्वीकार करेंगे। . . अन्यजाति स्वीकार करेंगे. जैसे एलिय्याह और एलीशा के दिनों में इस्राएल अयोग्य था, वैसे ही वे मसीह के दिन में भी अयोग्य थे।

Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 5

आराधनालय में सभी लोग क्रोधित हो गए जब उन्होंने येशु को यह कहते सुना कि परमेश्वर ने अतीत में अन्यजातियों के साथ अच्छा व्यवहार किया था (लूका ४:२८)। आज ऐसे लोग हैं जो दावा करते हैं कि नई वाचा में कहीं भी यीशु ने विशेष रूप से यह नहीं कहा है कि “मैं ईश्वर हूं।” ख़ैर, नाज़ारेथ के लोग इसे लेकर इतने भ्रमित नहीं थे। वे ठीक-ठीक समझ गए कि वह कौन होने का दावा कर रहा था। उनकी प्रतिक्रिया यह थी कि वे उठे और उसे शहर से बाहर निकाल दिया, जिसने उसके सूली पर चढ़ने के दिन का पूर्वाभास दिया क्योंकि फाँसी शहर की दीवारों के भीतर नहीं दी गई थी (लैव्यव्यवस्था २४:१४)।

वे उसे उस पहाड़ी की चोटी पर ले गए जिस पर शहर बनाया गया था, ताकि उसे चट्टान से नीचे फेंक दिया जा सके (लूका ४:२९)। रब्बियों ने इसे “ईश्वर के हाथ से मौत” कहा, लेकिन, विडंबना यह है कि यह वास्तव में लोगों के हाथों में था, जो बिना किसी परीक्षण के मौके पर ही “विद्रोहियों की पिटाई” कर सकते थे, अगर कोई किसी सकारात्मक शिक्षा का खुले तौर पर उल्लंघन करते हुए पकड़ा गया, चाहे टोरा या मौखिक कानून से (देखें Ei – मौखिक कानून)। विद्रोहियों की पिटाई तब तक होती रही जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो गई।

परन्तु वह सीधे भीड़ के बीच से चला गया और अपने रास्ते चला गया (लूका ४:३०)। दो अन्य अवसरों पर लोगों ने उसे मारने के लिए मंदिर में पत्थर उठाए (यूहन्ना ८:५९ और १०:३१)। विरोधी ने सदैव अपने पुत्र के लिए परमेश्वर की निर्धारित योजना को छोटा करने का प्रयास किया। लेकिन यीशु को येरूशलेम में क्रूस पर मरना तय था, नाज़रेथ में एक चट्टान से नहीं। यह उनके मरने का नियत समय नहीं था।

नाज़रेथ यिज्रेल की घाटी की ओर देखने वाले पहाड़ पर एक छोटी सी घाटी में बना है। कैथोलिक परंपरा सिखाती है कि जब यीशु को मारने की कोशिश की गई तो मैरी, यीशु की माँ, वहाँ मौजूद थी। जब उसके बेटे को चट्टान के किनारे पर ले जाया गया, तो परंपरा कहती है कि वह डर गई थी। इसलिए, वहाँ एक कैथोलिक चर्च बनाया गया, जिसका नाम था, “द चैपल ऑफ़ अवर लेडी ऑफ़ फ़्राइट।” यहीं नहीं रुकते, वे यह भी दावा करते हैं कि यीशु ने ताबोर पर्वत पर छलांग लगाई, जो लगभग चार मील दूर है! आज कैथोलिक माउंट ताबोर को माउंट ऑफ द लीप कहते हैं।

प्रभु की यह घोषणा कि वह वास्तव में लंबे समय से वादा किया गया मेशियाक था, सार्थक था क्योंकि यह एक सूक्ष्म जगत था जो सुसमाचार के प्रकट होते ही स्वयं प्रकट हो जाएगा। येशुआ की घोषणा कि उसके गृहनगर में किसी भी भविष्यवक्ता को स्वीकार नहीं किया जाता है (लूका ४:२४) यरूशलेम में उसकी अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी बन गई। फिर भी मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से, उसने यहूदी और अन्यजातियों को समान रूप से मुक्ति प्रदान की।

यीशु आत्मा के गरीबों को खुशखबरी सुनाना और आज कुचले हुए लोगों को आज़ादी का

Ch – यहोवा की आत्मा मुझ पर है लूका ४ का १६ से ३० | 6

प्रचार करना जारी रखता है। लेकिन क्या आप खुद को नासरत के आराधनालय में उन लोगों में से एक के रूप में कल्पना कर सकते हैं, जिन्होंने प्रभु को पहली बार यह घोषणा करते हुए सुना है कि यशायाह की भविष्यवाणी उनकी आंखों के ठीक सामने पूरी हो रही थी? आपने शायद सोचा होगा, “मैं वास्तव में पाप से कैसे मुक्त हो सकता हूँ, या अपराधबोध और निराशा से कैसे मुक्त हो सकता हूँ? आखिरी बार कब मैंने महसूस किया था कि किसी ने मुझ पर एहसान किया है, परमेश्वर की तो बात ही छोड़ दीजिए?”

येशुआ के दिनों में एक इस्राएली के लिए, यहोवा की कृपा का एक वर्ष लैव्यव्यवस्था २५ में जुबली के वर्ष के रूप में संदर्भित किया जाता था। हर पचासवें वर्ष में, सभी ऋण माफ कर दिए जाते थे और सभी दास मुक्त कर दिए जाते थे; इज़राइल में सभी को जश्न मनाने और आराम करने, छह साल की फसल के फल का आनंद लेने के लिए बुलाया गया था। यीशु मसीह का धन्यवाद, हमारे पाप का ऋण हर दिन हमसे उठाया जा सकता है; और पुराने तरीकों की गुलामी को पवित्र आत्मा की शक्ति से किसी भी समय हटाया जा सकता है। इन शब्दों को सुनकर हम सभी आनन्दित हो सकते हैं!

तथ्य यह है कि मसीहा के मंत्रालय को अधिकांशतः समाज के बहिष्कृत लोगों द्वारा स्वीकार किया गया था, यहां तक कि अविश्वासी अन्यजातियों द्वारा भी, कुछ यहूदियों को धमकी दी गई थी, और उनके बीच जानलेवा विचार पैदा हुए थे। नाज़रीन के बीच, इस तथ्य को स्वीकार करना कठिन था कि मनमौजी रब्बी अपने गृहनगर के बाहर इतना लोकप्रिय था। “कफ़रनहूम को सभी चमत्कार क्यों मिलने चाहिए (लूका ४:२३)? फिर भी उनकी प्रतिक्रिया ने उसे विचलित नहीं किया। यह केवल उस विरोध की शुरुआत होगी जिसका सामना यीशु को करना होगा जब वह यरूशलेम में अपने भाग्य की ओर बढ़ रहा था।

कभी-कभी हम सोच सकते हैं कि पाखण्डी रब्बी को वास्तव में विवाद खड़ा करने में मजा आया। वह जानता होगा कि उसकी बातें हमेशा आसानी से गले नहीं उतरेंगी, लेकिन उसने कभी उन्हें नरम करने की कोशिश नहीं की। लेकिन तथ्य यह है कि यीशु चीज़ों को हिलाना चाहता है ताकि वह हमारा ध्यान आकर्षित कर सके। वह हमारी अपेक्षा के विपरीत शुभ समाचार का प्रचार करने आया था, और यदि हमें ठीक से सुनना है, तो हमें असहज करने की आवश्यकता होगी। अन्यथा हम कैसे पाप से अलग होकर क्रूस के रास्ते पर उसका अनुसरण करना चाहेंगे?

प्रभु यीशु, आज आप हमें एक विकल्प प्रदान करते हैं: आपके शब्दों को स्वीकार करना, या हमारे अपने पतित स्वभाव की इच्छाओं को सुनना। आपकी कृपा के उदार प्राप्तकर्ता और आपकी शांति के साधन बनने में हमारी सहायता करें। तथास्तु। वह समर्थ है।